# विद्यालय आधारित गतिविधियाँ

# School Based Activity

Topic ____________ Date ________

| S.NO | TOPIC | Pg. NO | sign |
|---|---|---|---|
| 1. | मूल्यांकन | | |
| 2. | निरन्तर व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा (CCE) | | |
| 3. | आवश्यकताएँ, महत्व, लाभ (CCE) | | |
| 4. | विशेषताएँ (CCE) | | |
| 5. | कमियाँ (CCE) | | |
| 6. | निष्कर्ष (CCE) | | |
| 7. | शिक्षण सहायक सामग्री ↓ | | |
| 8. | अर्थ, परिभाषा | | |
| 9. | महत्व | | |
| 10. | उद्देश्य | | |
| 11. | गुण | | |
| 12. | कार्य | | |
| 13. | महत्वपूर्ण बातें | | |
| 14. | वर्गीकरण | | |
| 15. | दृश्य सामग्री | | |
| 16. | श्रव्य सामग्री | | |
| 17. | दृश्य श्रव्य सामग्री | | |
| 18. | इंटरनेट | | |
| 19. | ~~चित्र~~ चार्ट का निर्माण | | |
| 20. | मॉडल का निर्माण | | |
| 21. | मिट्टी या पेपर के मॉडल | | |
| 22. | निष्कर्ष | | |
| 23. | विद्यालय रिपोर्ट | | |
| 24. | विद्यालय की पहचान | | |

Topic _____ Date _____

| S. NO | TOPIC | Pg. NO | sign |
|---|---|---|---|
| 25. | प्रिंसिपल का ऑफिस | | |
| 26. | कक्षा कक्ष | | |
| 27. | प्रार्थना सभा | | |
| 28. | योगासन | | |
| 29. | सद्गामी क्रियाएँ | | |
| 30. | खेल का मैदान | | |
| 31. | पुस्तकालय | | |
| 32. | कम्प्यूटर शिक्षा | | |
| 33. | प्रयोगशाला | | |
| 34. | सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम | | |
| 35. | मध्याह्न भोजन | | |

Topic ______ Date 1

53

# मूल्यांकन

मूल्यांकन का अर्थ सामान्यतः वस्तु विचार पद्धति आदि के मूल्य को आंकने की प्रक्रिया के रूप में लिया जाता है। परन्तु परीक्षा के क्षेत्र में इसे एक तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग किया जाता है। पहले शिक्षा शब्द को केवल पढ़ने लिखने से सम्बंधित माना जाता था परन्तु अब इसके द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व की पूर्ण जानकारी प्राप्त की जाती है। आजकल शिक्षा विशेषज्ञ मूल्यांकन द्वारा केवल छात्रों के विषय में ज्ञान की अपेक्षा उनके व्यक्तित्व के सभी पक्षों के विकास की जानकारी प्राप्त करते हैं। इसके द्वारा शिक्षक का भी मूल्यांकन होता है। इसके द्वारा शिक्षण विधियाँ, पाठ्य सामग्री तथा पाठ्यक्रम में सुधार किया जा सकता है। अतः हम कह सकते हैं कि मूल्यांकन एक व्यापक तथा निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। जो शिक्षा को उद्देश्य केन्द्रित बनाने में मदद करती है।

Topic _____ Date 2

# * निरंतर व्यापक मूल्यांकन *

निरंतर व्यापक मूल्यांकन एक साधन के रूप में बाधा परिहार आवश्यक परिणाम देने में असमर्थ रही है। मूल्यांकन के द्वारा विद्यार्थियों का हित कम तथा अहित अधिक हुआ है। इसके द्वारा विद्यार्थियों में नकल, अनुशासन हीनता तथा दुर्व्यवहार जैसी अनेक कुरीतियाँ तथा भ्रष्टाचार को जन्म हुआ है।

# * निरंतर व्यापक मूल्यांकन का अर्थ *

आजकल की प्रवृत्तियाँ निरंतर में है यानि निरंतर व्यापक मूल्यांकन के पक्ष में है। शिक्षा उद्देश्योन्मुख है। प्रत्येक शैक्षिक कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होना चाहिए। अतः विद्यालय में प्रदान किये जाने वाले शैक्षिक अनुभव, आवश्यक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता प्रदान करने वाले होने चाहिए निरंतर व्यापक आंतरिक मूल्यांकन का लक्ष्य विद्यार्थियों के सभी पक्षों का मूल्यांकन कर उनके व्यक्तित्व का विकास करना है।

डॉ. लता कुमार: शिवाय

Topic ____ Date 3

## * निरंतर व्यापक मूल्यांकन की धारणा

निरंतर व्यापक मूल्यांकन का उद्देश्य, विद्यार्थी के मूल्यांकन के सभी उद्देश्यों को पूर्ण करना तथा सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास हेतू उसके प्रत्येक पक्ष का विकास करना है।

*** उद्देश्य आधारित** → निरंतर व्यापक आंतरिक मूल्यांकन उद्देश्य आधारित होना चाहिए। शैक्षिक उद्देश्य बच्चे के सम्पूर्ण वातावरण को समक्ष रख कर बनाए जाते है। जिससे जीवन के सभी पक्ष - सामाजिक, राजनैतिक सांस्कृतिक, आर्थिक आदि सम्मिलित होते है। शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए बच्चों को उपयुक्त अधिगम अनुभव प्रभाव करना चाहिए ताकि मूल्यांकन द्वारा यह पता चल सके कि किस सीमा तक शैक्षिक अनुभव उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए बच्चों की सहायता करने में सफल हुए है।

*** निरंतर** → निरंतर मूल्यांकन का संबंध उन विधियों के साथ है जो किसी शिक्षा प्रणाली के बारे में सुचनाएँ तथा जानकारियाँ एकत्र करती है। यह निरंतर प्रयास की एक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा यह मूल्यांकन होता है। यदि शिक्षक अपनी शिक्षण विधियों में परिवर्तन लाना चाहता है तो निरंतर मूल्यांकन आवश्यक है अन्यथा शिक्षक की शिक्षण प्रणाली दोषपूर्ण रहेगी।

ॐ नमः शिवाय

Topic ____ Date 4

*** व्यापक** → विद्यार्थियों के शैक्षिक तथा अशैक्षिक विचार सीमा के साथ संबंधित उद्देश्यों की प्राप्ति करने में उसकी प्रगति की जाँच प्रक्रिया, व्यापक मूल्यांकन कहलाती है। मूल्यांकन को व्यापक बनाने के लिए वृद्धि तथा विकास के शैक्षिक तथा अशैक्षिक पक्षों के लिए व्यापक मूल्यांकन योजना में आवश्यक सम्मिलित करना चाहिए। विद्यालय में प्रत्येक विद्यार्थी का संचित अभिलेख कार्ड बनाया जा सकता है।

*** आंतरिक मूल्यांकन** → इसका अर्थ एक व्यक्तिगत शिक्षार्थी को उसके विद्यालय में शिक्षा प्रदान कर रहे शिक्षकों के द्वारा मूल्यांकन है। आंतरिक मूल्यांकन तैयार करने के लिए शिक्षार्थी का प्रतिदिन तथा प्रयोगशालाओं के कार्य कक्षा परीक्षण की स्थितियों में कार्य, घरेलू परीक्षाओं, दत्तकार्यों आदि को भी सम्मिलित करना चाहिए। निरंतर व्यापक आंतरिक तथा उद्देश्य आधारित होना चाहिए क्योंकि यह बच्चों के मूल्यांकन का सम्पूर्ण कार्यक्रम होना चाहिए यह धारणा भारतीय शिक्षा आयोग (1964-1966) के द्वारा प्रस्तुत मूल्यांकन की धारणा से मिलती जुलती है। मूल्यांकन एक निरंतर प्रक्रिया है। यह सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अटूट अंग है।

## * आवश्यकता | महत्व | लाभ

निम्नलिखित कारणों तथा लाभों से, निरंतर व्यापक आंतरिक मूल्यांकन की आवश्यकता तथा महत्व प्रकट होता है।

⇒ बाह्य परीक्षाओं की बुराइयों को दूर करना ⇒ बाह्य परीक्षाओं की कमियों तथा बुराइयों संकीर्णता, सुयोग, मेल कारक, नकल आदि पर नियंत्रण, निरंतर व्यापक मूल्यांकन द्वारा किया जा सकता है।

⇒ विद्यार्थियों का सामर्थ्य प्रकट करना ⇒ यह मूल्यांकन विद्यार्थियों के सामर्थ्य का उपयुक्त मूल्यांकन करता है। यह उसकी आवश्यकताओं, रुचियों, उद्देश्यों प्रवृत्तियों आदि का पता लगाने का अवसर प्रदान करता है। इस प्रकार यह मूल्यांकन विद्यार्थी के विकास का मार्ग खोलता है।

⇒ अध्ययन की नियमित आदत के लिए ⇒ इस मूल्यांकन के कारण विद्यार्थियों को नियमित अध्ययन की आदत हो जाती है। यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। हर समय यह घटित होती रहती है।

⇒ निष्पक्षता ⇒ शिक्षा का उद्देश्य आधारित होने के कारण, यह शिक्षक को शिक्षार्थी के सम्पूर्ण तथा उचित व्यक्तित्व के विषय में सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करता है। यह जानकारी शिक्षक निष्पक्ष होकर देता है।

क्रमशः शिवाय

Topic ________ Date 6

⇒ **शिक्षण में परिवर्तन तथा सुधार** ⇒ मूल्यांकन द्वारा शिक्षण उद्देश्यों के सम्बंध में जानकारी प्राप्त की जा सकती है। यदि निर्धारित उद्देश्य प्राप्त हुआ है तो इस आधार पर यह मान लिया जाता है कि शिक्षण के विभिन्न अंग महत्वपूर्ण है या प्रभावपूर्ण है। उसमें किसी प्रकार की परिवर्तन की आवश्यकता नहीं। यदि उद्देश्यों की प्राप्ति सफलतापूर्वक नहीं होती तो मानना चाहिए कि शिक्षण की प्रक्रिया में सुधार की आवश्यकता है।

⇒ **छात्रों की उपलब्धि की जानकारी** ⇒ छात्रों ने जो पढ़ा है, सीखा है उसको किस सीमा तक समझा है। इसकी जानकारी मूल्यांकन द्वारा होती है। सम्प्रेषण द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान किस सीमा तक छात्रों ने अर्जित किया है। इसके द्वारा यह पता लगाया जा सकता है किस छात्र ने किस विषय में कितनी उपलब्धि प्राप्त की है।

⇒ **छात्रों को प्रेरित करना** ⇒ मूल्यांकन के आधार पर जब किसी विद्यार्थी को सफल घोषित किया जाता है तो विद्यार्थी प्रशंसा का पात्र बन जाता है। उसका मन उत्साह से भर जाता है तथा उसे स्वयं आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। वह अधिगम की दिशा में और आगे तरक्की करता है।

Topic _____ Date 7

# निरंतर व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया / विशेषताएँ

* निरंतर व्यापक मूल्यांकन में विद्यार्थी की प्रगति की सीमा और स्तर के निर्धारण में नियमित सहायता मिलती है।

* इसमें दोषों का निदान किया जाता है और इसकी सहायता से शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी की शक्ति, कमियाँ और उसकी आवश्यकताओं का पता लगा सकते हैं। इससे शिक्षक को तत्काल फीडबैक प्राप्त होती है जिससे यह निर्णय लिया जा सकता है कि इस पाठ को या इस विषय वस्तु को फिर से कक्षा में दोहराया जाए या नहीं।

* निरंतर व्यापक मूल्यांकन औपचारिकता और औपचारिकेत्तर के क्षेत्र में सुनिश्चित करता है। इससे औपचारिक, चरित्र, मुख्य प्रारूप के स्वरूप में परिवर्तन का पता लगाने में सहायता मिलती है।

* इससे भविष्य में अध्ययन के क्षेत्र में पाठ्यशालाओं के सम्बंध में तथा व्यवसायों के चयन के संबंध में निर्णय लेने में सहायता मिलती है।

* सभी बच्चों को स्वाभाविक रूप से सीखने के लिए प्रेरित करना इस मूल्यांकन का महत्वपूर्ण कार्य है।

* यह पुस्तकालय में अध्ययन की आदतें का विकास करता है।

* इससे बालक के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

Topic _____ Date 8

* यह आपसी विचार विमर्श के अवसर प्रदान करता है।

* इसके आधार पर विद्यार्थी की भविष्य में सफलता की भविष्यवाणी की जा सकती है।

* इसके अन्तर्गत अपनाई जाने वाली तकनीक जैसे - सेमिनार सामूहिक विचार विमर्श आदि विद्यार्थी अध्यापक तथा विद्यार्थी - विद्यार्थी के बीच अन्त: क्रिया को प्रोत्साहित करती है।

* इसमें बालक के ज्ञानात्मक तथा भावात्मक तथा क्रियात्मक पक्ष को भी शामिल किया जाता है।

* यह मूल्यांकन समय - समय पर बालक और अध्यापक दोनों को प्रतिपुष्टि प्रदान करता है।

ॐ नमः शिवाय

Topic _____ Date 9

# * निरंतर व्यापक मूल्यांकन कीमियाँ / दोष *

* इसमें बच्चों की प्रगति की तुलना दूसरे बच्चों के साथ की जाती है।

* यह मूल्यांकन तभी संभव है जब अध्यापक एवं विद्यार्थी के बीच मधुर सम्बंध हो।

* कभी कभी अध्यापक इसका गलत प्रयोग करते हैं और समय-समय पर विद्यार्थियों को चेतावनी देते रहते हैं जिससे उनमें असुरक्षा की भावना आने का भय बना रहता है।

* अध्यापक को ऐसे मूल्यांकन के लिए प्रत्येक विद्यार्थी की भूमिका को जानना आवश्यक होता है।

* अध्यापक का पक्षपात इसे वस्तुनिष्ठ की अपेक्षा व्यक्तिनिष्ठ बना देता है।

* यही बड़ी संख्या वाले कक्षा-कक्ष में संभव नहीं होता है।

* इसमें समय तथा शक्ति का अधिक उपयोग होता है।

नाम: शिवाय

Topic Date 10

# * निष्कर्ष *

* मूल्यांकन के द्वारा शिक्षक यह पता लगाया जाता है कि सभी बच्चों में कितना स्मरण, बोध, अभिवृत्ति तथा अभिव्यक्ति की योग्यता है।

* शिक्षक द्वारा दिया गया कक्षा कार्य और गृहकार्य छात्र समय पर पूर्ण करते हैं या नहीं।

* शिक्षक द्वारा देखा जाता है कि विद्यार्थियों द्वारा कार्य पुस्तिका में किया गया कार्य साफ - सुथरा है या नहीं।

* विद्यार्थियों को प्रयोजन कार्य की स्पष्ट समझ है या नहीं।

* छात्र कक्षा कक्ष में होने वाली गतिविधियों में कितने सहभागी है अर्थात वे कक्षा - कक्ष या कक्षा के बाहर होने वाले कार्यों में ध्यान देते हैं या नहीं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा में मूल्यांकन की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

Topic _____ Date 11

# शिक्षण सहायक सामग्री

शिक्षण सहायक सामग्री या अनुदेशन सामग्री वे तकनीक या प्रक्रिया है जो शिक्षण अधिगम को अधिक प्रभावी अधिक रूचिकर, अधिक अभिप्रेरित तथा अधिक पुनर्बलन बनाती है। इन्हें शिक्षण सहायक सामग्री इसीलिए कहा जाता है, क्योंकि यह शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने में सहायता करती है। यह शिक्षण तथा अधिगम के लिए महत्वपूर्ण औजार का कार्य करती है।

## अर्थ

शिक्षण सहायक सामग्री से तात्पर्य उस सामग्री से है जो शिक्षक की शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने बनाने में सहायता प्रदान करती है।

यह बालकों के अधिगम को बल प्रदान करती है।

शिक्षक जिस विषय वस्तु को व्याख्यान तथा उदाहरणों द्वारा स्पष्ट नहीं कर पाते। उस विषय वस्तु को शिक्षण सहायक सामग्री द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

क्रमः शिवाय

Topic ______ Date ____ 12

# परिभाषा

* डेण्ड के अनुसार ⟹ सहायक सामग्री वह सामग्री है जो कक्षा में लिखित या बोली गई सामग्री को समझने में सहायता प्रदान करती है।

* कार्टर ए गुड के अनुसार ⟹ कोई भी ऐसी सामग्री जिसके माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया को उद्दीपन किया जा सके अथवा श्रावणीन्द्रिय संवेदनाओं के द्वारा आगे बढ़ाया जा सके वह शिक्षण सहायक सामग्री कहलाती है।

# महत्व

इसमें कोई संदेह नहीं है कि शिक्षण में सहायक सामग्री अध्ययन को एक नई दिशा देती है। इन सामग्रियों के महत्व को निम्न बिन्दुओं के आधार पर जान सकते हैं ⟹

* सहायक सामग्री विषय को समझने व सीखने में स्थाई रूप से सहायक होती है।

* जहाँ शिक्षक का मौखिक वक्तव्य कम प्रभाव उत्पन्न करता है वहीं दृश्य सामग्री पाठ को रोचकता प्रदान कर उसे बोधगम्य बनाती है।

नम: शिवाय

Topic ______ Date 13

* यह अनुभवों के द्वारा ज्ञान प्रदान करती है।

* यह शिक्षक के समय व ऊर्जा दोनों की बचत करती है।

* यह विचारों को प्रवाहात्मकता प्रदान करती है।

* यह भाषा सम्बंधी कठिनाइयों को दूर करती है।

* अध्यापन रुचिकर होने से छात्र अधिक सक्रिय रहते है और पाठ को अधिक सरलता से ग्रहण करते है।

* इससे विद्यार्थी गतिविधियों में सक्रिय बने रहते है और अनुसंधान में हिस्सा लेते है।

* शिक्षण अधिगम रूचि को बनाना।

* छात्रों को अधिक क्रियाशील बनाना।

* अभिरूचियों पर अनुकूल प्रभाव डालना।

* बालकों में निरीक्षण शक्ति का विकास करना।

* बालकों का ध्यान पाठ की ओर केन्द्रित करना।

* बालकों में प्रभावात्मक सूचनाओं को रोचक ढंग से प्रदान करना।

Topic _____ Date 14

* पाठ्यसामग्री को सरल, स्पष्ट और बोधगम्य बनाना।
* बालकों को नए ज्ञान की प्राप्ति हेतु मानसिक रूप से तैयार करना और प्रेरणा देना।
* सीखने की गति में सुधार करना।
* जटिल विषयों को सरल रूप में प्रस्तुत करना।
* तीव्र एवं मंदबुद्धि छात्रों की योग्यतानुसार शिक्षा देना।

## * गुण *

* परिशुद्धता,
* प्रासंगिकता,
* रोचकता,
* अनुकूलता,
* अल्प समय लेने वाली,
* सस्ता।

अ.मि. शिवाय

Topic ______ Date 15

# * कार्य *

शिक्षण व्यवस्था में सहायक सामग्री का महत्वपूर्ण स्थान है विशेषकर छोटी उम्र के विद्यार्थियों के लिए यह विशेष महत्व रखती है इसके महत्व को ध्यान में रखते हुए शिक्षा शास्त्रियों ने एकमत होकर शिक्षण हेतु इसे स्वीकार किए है इसके निम्नलिखित कार्य है —

* क्रिया का सिद्धान्त ⇒ इन सामग्रियों के प्रयोग से विद्यार्थियों को नाना प्रकार की क्रियाएँ करने का अवसर मिलता है। वह खेल - खेल में जटिल पाठ्य वस्तु को आसानी से समझ लेते है।

* स्पष्टीकरण ⇒ सहायक सामग्रियों के माध्यम से कठिन से कठिन पाठ्यवस्तु को प्रत्यक्ष देखकर छात्रों के मन में उठी समस्याओं का समाधान और स्पष्टीकरण हो जाता है।

* अनुभवयुक्त शिक्षण ⇒ कहते है कि रहे हुए की अपेक्षा देखा और किया गया कार्य अर्थात् प्राप्त किया गया ज्ञान लम्बे समय तक याद रहता है। इसमें छात्रों के मौलिक चिंतन को भी प्रोत्साहन मिलता है।

* शब्दकोष में वृद्धि ⇒ रेडियो टीवी चलचित्र, भाषा प्रयोगशाला आदि का सुनते सुनते बच्चों के शब्द भण्डार में वृद्धि होती है। उनका शब्दकोष तथा अभिव्यक्ति कौशल में सुधार आ जाता है।

Topic _____ Date 16

# महत्वपूर्ण बातें

* सहायक सामग्री प्रकरण से संम्बोधित होनी चाहिए।

* उस शिक्षण सहायक सामग्री का चयन करना चाहिए जो शिक्षण बिंदु के लिए सरल, सुगम और प्रयुक्त हो।

* जो सामग्री प्रयोग की जा रही है सही हालात में होनी चाहिए।

* एक वस्तु को समझाने के लिए ज्यादा सामग्री का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

* सामग्री का प्रयोग जितनी देर आवश्यक हो उतनी ही देर तक प्रयोग किया जाना चाहिए जो कि छात्रों में रुचि जगा सके और उन्हे जिज्ञासु बना सके।

* प्रयोग करने से पहले शिक्षक को एक बार उस सामग्री को कृत्रिम वातावरण में प्रयोग करके देख लेना चाहिए।

* अनावश्यक सामग्री का प्रयोग नहीं करना चाहिए। प्रयोग के तुरन्त बाद सामग्री को छात्रों के सामने से हटा देना चाहिए।

ॐ नमः शिवाय

Date 17

# * शिक्षण सहायक सामग्री का वर्गीकरण

शिक्षण सहायक सामग्री का तीन भागों में वर्गीकरण किया गया है जो निम्नलिखित है ⇒

1. दृश्य सामग्री,
2. दृश्य श्रव्य सामग्री,
3. श्रव्य सामग्री।

## * दृश्य सामग्री

विद्यार्थी सदा ही कक्षा में कक्षा से बाहर निरंतर देखता रहता है इसलिए अध्यापक का उत्तरदायित्व इस निरीक्षण का सही दिशा प्रदान करना है। दृश्य सामग्री निम्नलिखित प्रकार की होती है –

⇒ कार्टून,
⇒ चॉकबोर्ड,
⇒ चार्ट,
⇒ मानचित्र,
⇒ ग्लोब,
⇒ पोस्टर,
⇒ फिल्में।

Topic _____ Date 18

# श्रव्य सामग्री

वह सामग्री जिसमें विद्यार्थी सुनकर अनुदेशन प्राप्त करता है जैसे - रेडियो, रिकॉर्ड प्लेयर, टेपरिकार्डर, ग्रामोफोन आदि। ये सभी श्रव्य सामग्री के उदाहरण हैं।

# दृश्य श्रव्य सामग्री

इस वर्ग में वे सभी साधन सम्मिलित होते हैं जो हमारी श्रवण तथा चक्षु दोनों ही इन्द्रियों को प्रभावित करती है। विद्यार्थी देखकर तथा सुनकर अनुदेशन प्राप्त करते हैं। दृश्य श्रव्य सामग्री निम्नलिखित प्रकार की होती है।

⇒ टेलीविजन,
⇒ वीडियो,
⇒ कम्प्यूटर,
⇒ चलचित्र,
⇒ नाटक।

Topic _____ Date 19

# श्यामपट्ट

शिक्षण प्रक्रिया में श्यामपट्ट अध्यापक का सबसे निकट का मित्र है। यदि कक्षा में श्यामपट्ट नहीं है तो उसे शिक्षण कक्ष नहीं कहा जा सकता। श्यामपट्ट पर शब्दों, मुहावरों, नियमों, सिद्धान्तों आदि को लिखा जा सकता है।

# चित्र, चार्ट, मानचित्र, पोस्टर आदि

रचनाओं को पढ़ाते समय विषयवस्तु के अनुसार चित्र चार्ट रेखाचित्र मानचित्र, प्रतिरूप आदि का प्रयोग करके विषयवस्तु को सरल स्पष्ट और बोधगम्य बनाया जा सकता है। जीवनी निबंध पढ़ाते समय उसके रचयिता, कवि या लेखक का परिचय देने के लिए उनके चित्र दिखाने से बच्चों को उनके जीवन परिचय की तरफ आकर्षित किया जा सकता है। 'ताजमहल' पर रचना करते समय ताजमहल का मॉडल दिखाया जा सकता है। विभिन्न शब्दों के अर्थ - स्पष्ट करने के लिए श्यामपट्ट पर चॉक से रेखाचित्र बनाकर पाठ को रोचक व सरल बनाया जा सकता है जैसे - वृत्त, भग्नाकार, आयताकार आदि शब्दों का स्पष्टीकरण किया जा सकता है।

## चलचित्र

टेलीविजन की तरह चलचित्र भी एक आधुनिक दृश्य श्रव्य उपकरण है। जिन स्थानों को हम स्वंय प्रत्यक्ष रूप से नहीं देख सकते उन्हें चलचित्र के माध्यम से बच्चों को दिखा कर वर्णन कराकर बच्चों की रचनात्मक योग्यता को विकसित करने का प्रयास किया जा सकता है। महापुरुषों की जीवनी आत्मकथा आदि से संबंधित चलचित्र बच्चों के ज्ञान में वृद्धि करने एवम् उनका चरित्र निर्माण करने में भी सहायक सिद्ध हुए है। प्राकृतिक जीवन से संबंधित दृश्य भी चलचित्र के माध्यम से दिखाकर बच्चों की कल्पना को साकार रूप प्रदान किया जा सकता है।

## रेडियो

रेडियो द्वारा प्रसारित होने वाले कार्यक्रम शिक्षण प्रक्रिया में विशेष महत्व रखते है। आकाशवाणी से प्रसारित कविता पाठ, वार्ता समाचार संवाद वाद विवाद बाल नाटक आदि कार्यक्रम बच्चों का मनोरंजन करने के साथ साथ उनके लिए शिक्षाप्रद भी होते है। इन कार्यक्रम को सुनकर उनका शुद्ध उच्चारण शब्द ज्ञान में वृद्धि, बोलने की शैली का ज्ञान, ध्यान पूर्वक सुनने की योग्यता तथा उनके ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है।

नाम: शिवाय

Topic Date 21

# ✳ इंटरनेट ✳

इंटरनेट द्वारा प्रदत ई-मेल सेवाएँ विद्यार्थियों एवम् अध्यापकों को कहीं भी किसी भी समय एक दूसरे से जोड़ने में पर्याप्त रूप से सहायक सिद्ध होती है। इससे एक और जहाँ अध्यापक अपने साथी अध्यापकों तथा विषय विशेषज्ञों से दुनिया में कहीं भी किसी समय जुड़े रहकर एक दूसरे से विचार विनिमय कर सकते है। वहाँ वे अपने विद्यार्थियों से भी जुड़े रहकर उनके अधिगम कार्य में उनकी उचित सहायता कर सकते है। इसके द्वारा विद्यार्थियों को भी आपस में एक दूसरे से अपने अधिगम हेतु आवश्यक अन्त: क्रिया करने में मदद मिलती है।

ई-मेल सेवाओं द्वारा उठाए जाने वाले लाभ ⇒

✳ अध्यापक ई-मेल के माध्यम से अपने सभी विद्यार्थियों को उचित अभ्यास तथा प्रोजेक्ट कार्य प्रदान कर सकते हैं।

✳ ई-मेल को पारस्परिक विचार विनिमय संप्रेषण और आपसी संवाद का एक ऐसा अच्छा लिखित साधन समझा जा सकता है, जिससे भाषा शिक्षण और अधिगम के कार्य में सहायता किसी भी समय या जगह पर आसानी से उपलब्ध हो सकती है।

संदर्भ: विवाध

Topic ______________________ Date 22

* इंटरनेट हमें चैटिंग की सुविधाएँ प्रदान करने का भी कार्य करता है। जब दो व्यक्ति अलग-अलग जगह अपने कम्प्यूटरों पर बैठे हो तो वो अपने कम्प्यूटर पर जो कुछ उन्हें आपस में संप्रेषित करना होता है उसे टाइप करते जाते हैं और यह टाइप किया हुआ संदेश एक दूसरे तक पहुँचता रहता है। विद्यार्थी और अध्यापक दोनों ही एक दूसरे के साथ इस तरह आवश्यक अन्तःक्रिया कर सकते हैं।

* इंटरनेट द्वारा एक उपयोगी सुविधा अधिगम हेतु आज हम ब्लागस के माध्यम से मिल सकती है। यह एक ऐसी वेबसाइट है जिस पर किसी विषय से संबंधित जानकारी लिखित सूचना, आकृतियाँ, ध्वनियों तथा एनिमेशन के द्वारा दी जाती है। एक ब्लाग कई वेब पृष्ठों से जुड़ा हो सकता है।

* आधुनिक सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी साधनों एवम् उपकरण अपने विविध रूपों में भाषा के शिक्षण अधिगम में अध्यापक और विद्यार्थी की सहायता करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। आज के युग में विकसित इंटरेक्टिव स्टोरी बक्स तथा टॉकिंग बुक्स पढ़ने पढ़ाने में बहुत ही अधिक रोचकता एवं प्रभावशाली सिद्ध हुई है।

* अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों से प्राप्त लिखित कार्य की उचित रूप से जाँच कर उन्हें आवश्यक परामर्श या प्रतिपुष्टि प्रदान की जा सकती है

Topic _____ Date 23

# चार्ट का निर्माण

चित्र एवम् आरेखों का निर्माण करने से पहले चार्टों में निर्माण में कुशलता प्राप्त करने का प्रयास एक अध्यापक द्वारा किया जाना चाहिए क्योंकि इनका निर्माण चित्र एवम् आरेखों की अपेक्षा आसान एवम् सुविधाजनक होता है। विभिन्न प्रकार के चार्ट जैसे समप चार्ट, वृत्त की आकृति वाला चार्ट आदि का निर्माण आसानी से किया जाता है।

# महत्वपूर्ण बातें

* यह सोचा जाना चाहिए कि सूचना एवम् प्रक्रिया को किस प्रकार की रेखाओं, अनुकृतियों संकेतों एवम् आकृतियों से भली भाँति प्रदर्शित एवम् संप्रेषण किया जा सकता है।

* इन परिणत रेखाओं, आकृति, डिजाइन या स्कैच को अब सावधानीपूर्वक चार्टपेपर पर बहुत ही शुद्धता एवम् सफाई से बनाया जाना चाहिए।

* इसके बाद निर्मित अनुकृति, आकृति, डिजाईन या पैटर्न में जो वांछित सूचनाओं एवम् विचारों को ठीक तरह से संप्रेषित करने के लिए बनाई गई है। उपयुक्त रंगो से भरा जाना चाहिए।

* अब उचित शब्दावली एवं नामावली का प्रयोग किया जाना चाहिए। इस प्रकार से तैयार चार्ट बहुत स्पष्ट होता है।

Topic _____ Date 24

# मॉडल का निर्माण

मॉडल वास्तविक प्रतीकों के रूप में हमारे सामने आता है अतः इनका क्रियाशील होना जरूरी चाहिए। इनका प्रयोग विद्यालय पाठ्यक्रम के लगभग सभी विषयों के शिक्षण में आसानी से किया जा सकता है।

किसी वास्तविक वस्तु, मशीन प्राणी और उसके अंग प्रत्यंग आदि की रचना और कार्य प्रणाली को स्पष्ट करने के लिए मॉडल का निर्माण किया जाता है। परन्तु शैक्षिक लाभ और सीमित बजट को ध्यान में रखते हुए इनका छात्रों की सहायता से विद्यालय में ही निर्माण कराना अधिक उपयुक्त रहता है।

# महत्वपूर्ण बातें

जिस विषय को सोचकर उसको स्पष्ट करने के लिए ही मॉडल का उपयोग सहायक साधन के रूप में किया जाना चाहिए।

मॉडल के प्रयोग तथा प्रयोजन का पूरी तरह से स्पष्टीकरण हो जाने के पश्चात यह निर्णय लिया जाना चाहिए कि मॉडल किस सामग्री से बनाया जाय। प्रायः मिट्टी POP कागज, लकड़ी प्लाईवुड आदि का प्रयोग कर मॉडल का निर्माण किया जा सकता है।

मॉडल आसानी से पढ़ने पढ़ाने के लिए उपयोग में लाया जा सकता हो। वह जल्दी से खराब व क्षतिग्रस्त न हो। उसे भविष्य के लिए भी संभाल कर रखा जा सके।

Topic _____ Date 25

# मिट्टी या पेपर के मॉडल बनाना

मिट्टी और या पेपर की सहायता से विभिन्न प्रकार के मॉडलों को आसानी से बनाया जा सकता है। इस कार्य के लिए अधिकतर बालू चिकनी मिट्टी या मोटे कागज और गत्ते का प्रयोग करके मॉडल बनाना सबसे अधिक प्रचलित और सुविधाजनक माना गया है। मिट्टी से मॉडल बनाने के लिए इसको धोड़ी से तोड़कर महीन करके इसे 3 घंटे पानी में भिगोकर, ढ़ककर रखे दिया जाता है। जिस समय किसी पदार्थ का मॉडल बनाना हो उसी समय, आवश्यकतानुसार मिट्टी लेकर चित्र को ध्यान में रखकर मॉडल के निर्माण कार्य को पूरा करना चाहिए।

## निष्कर्ष

सहायक शिक्षण सामग्री द्वारा अध्यापक अपने शिक्षण काल में शिक्षण को सरल व इनकी सहायता से प्रभावशाली कर छात्रों के सामने प्रस्तुत कर सकता है। इस प्रणाली के द्वारा छात्र और अध्यापक अपने अधिगम अनुभव में आने वाली कठिनाइयों को आसानी से दूर कर सकते है।

नाम: शिवाय

Topic _____ Date 27

# विद्यालय रिपोर्ट

इसके अन्तर्गत विद्यालय एक समग्र संस्थान के रूप में दिखाई देता है। इसकी बहुत सारी विशेषताएँ हैं। विद्यालय मात्र चार दीवारी का नाम नहीं है। यह प्रत्येक विद्यार्थी के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालता है। सम्पूर्ण विद्यालय को एक इकाई के रूप में समझा जाना चाहिए।

विद्यालय प्रबंधन समीति भागीदारी प्रत्येक पाठशाला में होती है। इसमें शाला प्रधान अपने विद्यालय के विभिन्न कार्यों का सुचारू रूप से संचालित करने हेतू विद्यालय प्रबंध समीति को गठन करता है। इसमें सभी अध्यापक अपनी भागीदारी निभाते है।

हमारे स्कूल का वातावरण सामाजिक वातावरण है। जो छात्रों को समाज में रहने हेतू एक कुशल नागरिक बनाने में सक्षम है। यहाँ पर होने वाली संस्कृतिक कार्यक्रम तथा सहभागी क्रियाओं का विवरण इस विद्यालय रिपोर्ट में दिखाया गया है अथवा बताया गया है।

Topic _____ Date 28

# विद्यालय की पहचान

यह विद्यालय में स्थित है। यह के पास स्थित है। इसमें 1000 विद्यार्थी है। इसमें 40 अध्यापक तथा अध्यापिका है। एक प्रधानाध्यापक जो पूरे विद्यालय की व्यवस्था को संभाले हुए है। अपना उत्तरदायित्व अच्छी तरह से निर्वाह करते है। विद्यालय में सभी व्यवस्था है जैसे खेल का मैदान, पुस्तकालय, कम्प्यूटर लैब, भाषा प्रयोगशाला आदि। बच्चों के लिए मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था भी स्कूल में की गई है। पीने की पानी की समुचित व्यवस्था विद्यालय में है। लड़के तथा लड़कियों के लिए अलग-2 शौचालय की व्यवस्था विद्यालय में है।

Topic _____ Date 29

# प्रिंसिपल का ऑफिस

* यहाँ की मुख्याध्यापिका जी का ऑफिस तो बहुत ही सुंदर और सुव्यवस्थित है।

* उसमें मुख्याध्यापिका जी की कुर्सी और एक मेज रखी है जिसमें वह अपने कार्य हेतू संबंधित वस्तुएँ रखती है। वहाँ एक अलमारी है जहाँ पर स्कूल संबंधित और सम्पूर्ण शैक्षणिक व्यवस्था संबंधी सभी फाइलें रखी है। कुछ फाईलें कार्यालय संबंधी भी है तथा विद्यार्थी से संबंधित रिकार्ड भी इसमें शामिल है।

* यह रिकार्ड कैसे रखने है? क्या करना है? कब इनका प्रयोग किया जाना है। इसका निर्णय प्रिंसिपल द्वारा लिया जाता है।

* ऑफिस में सभी कक्षाओं के रजिस्टर होते है जिसमें —

⇒ स्टॉक रजिस्टर, मध्याह्न भोजन का हिसाब किताब लिखा जाता है।

⇒ प्रवेश फाइल जिसमें बच्चों के दाखिले आदि से सम्बंधित जानकारी होती है।

⇒ दैनिक पाठयोजना

Topic _____ Date 30

⇒ अवकाश रजिस्टर

⇒ स्वास्थ्य रजिस्टर

⇒ स्टाफ उपस्थिति रजिस्टर

⇒ अभिभावक शिक्षक सम्पर्क रजिस्टर

⇒ निर्देशक पाठ्यपुस्तक वितरण रजिस्टर

⇒ परीक्षा परिणाम रजिस्टर

⇒ कार्यालय आदेश पंजिका

⇒ रोकड़ बुक

⇒ दिनचर्या रजिस्टर

⇒ विद्यालय विकास रजिस्टर

यह सभी रिकार्ड मुख्यालय मुख्याध्यापिका की देख रेख में रखे जाते है और प्रयोग किए जाते है।

Topic _____ Date 31

# कक्षा - कक्ष

कक्षा में अध्यापक कक्षा कार्य में विद्यार्थियों की सहभागिता प्राप्त कर रहे है। विद्यार्थी सीखने के दौरान विशेष उत्साह दर्शाता है। एक अध्यापक विद्यार्थियों के साथ अन्तः क्रिया करते हुए विद्यार्थी को सीखाता है तथा विद्यार्थी सक्रिय होकर अधिगम अनुभव प्राप्त करते है।

कई बार अध्यापक अपने विषय को विभिन्न तरीकों से पढ़ाता है जैसे :—

⇒ प्रोजेक्टर द्वारा

⇒ समूह चर्चा द्वारा

⇒ समूह कार्य द्वारा

⇒ चार्ट प्रदर्शनी द्वारा

⇒ व्यक्तिगत निर्देशन

⇒ श्यामपट्ट कार्य लेखन द्वारा

⇒ उच्चारण शैली, गृहकार्य मूल्यांकन योजना स्वम नियोजित कार्य द्वारा।

Topic _____ Date 32

* इससे कक्षा - कक्ष वातावरण भी अच्छा बना रहता है।

* यहाँ विद्यालय में कक्षाकक्ष खुले तथा हवादार तो हैं ही, साथ में साफ सुथरे भी हैं। कक्षा में एक बहुत बड़ा श्यामपट्ट सामने वाली दीवार पर लगाया हुआ है। जिसको सभी बच्चे आराम से और अच्छी तरह से देख सकते हैं।

* अध्यापक के लिए एक अलग कुर्सी की व्यवस्था कक्षा में की गई है। तथा सभी विद्यार्थियों के बैठने की व्यवस्था उचित रूप से है।

* कक्षा कक्ष में एक फ्लैनल बोर्ड की भी व्यवस्था की हुई है जिस पर विषय वस्तु से सम्बंधित तथ्यों को काटकर चिपकाया जाता है।

* एक बच्चे का सम्पूर्ण विकास विद्यालय में होता है। इसीलिए कक्षा में इन सभी बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए।

Topic _____ Date 33

# प्रार्थना सभा

* हमारी संस्कृत में लिखा है किसी भी काम को करने से पहले भगवान का नाम लिया जाना चाहिए।

* विद्यालय में इसी बात का पालन करते हुए प्रार्थना सभा का आयोजन किया जाता है तथा वहाँ प्रार्थना की जाती है।

* प्रार्थना के समय सभी बच्चे स्कूल के मैदान में, शांति और अनुशासन से हाथ जोड़कर प्रार्थना करते है। गायत्री मंत्र का उच्चारण तीन बार किया जाता है और फिर प्रार्थना शुरू की जाती है। प्रार्थना के समाप्त होने पर राष्ट्रीय गान गाया जाता है।

* फिर स्कूल की प्रधानाचार्या जी बच्चों के सामने स्कूल के नियम और विशेष जानकारी देती है। प्रार्थना सभा में विशेष उत्सव पर भाषण कविता तथा नृत्य का भी आयोजन किया जाता है। किसी महापुरुष के विचार या नए सुविचार सभी को समझा रखे जाते है। एक विद्यार्थी द्वारा अखबार से मुख्य खबरे बोली जाती है।

नं. शिवानी

Topic ______ Date 34

# * योगासन *

आज योग का बहुत महत्व है। भारत ही नहीं अपितु विदेशों में भी इसके महत्व को स्वीकार किया गया है। यहाँ विद्यालय में भी सभी बच्चों को P.T या योगा करवाया जाता था। इसमें सभी अध्यापक और अध्यापिका भी शामिल होती है। न केवल योगा करवाया जाता है अपितु हमारे जीवन में इसका क्या महत्व है समझाया जाता है। विद्यार्थियों को योग द्वारा उनके शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य हेतु प्रेरित किया जाता था।

# सहभागी * क्रियाएँ

यहाँ विद्यालय में बच्चों का सर्वांगीण विकास करने के लिए सहभागी क्रियाओं को भी प्राथमिकता दी जाती है। पिकनिक क्षेत्र भ्रमण आदि की व्यवस्था होती है। NCC scouting आदि का भी विशेष प्रबंध किया जाता है।

Topic ______ Date 35

# खेल का मैदान

यहाँ का खेल का मैदान भी बहुत बड़ा है। जिसमें बच्चे सुबह आराम से योगा भी कर सकते हैं और छुट्टी हो जाने के बाद इसमें एक साथ खेलते भी हैं।

# पुस्तकालय

यहाँ पर बच्चों के लिए पुस्तकालय की भी व्यवस्था है। यहाँ कहानी पुस्तक, संदर्भ पुस्तक, अखबार की व्यवस्था है। बच्चे अपना मनोरंजन तथा ज्ञान को बढ़ाते हैं।

# कम्प्यूटर शिक्षा

आज के युग को देखते हुए कम्प्यूटर शिक्षा अनिवार्य है। यहाँ विद्यालय में विद्यार्थी को वास्तविक जीवन से जोड़ने के लिए कम्प्यूटर शिक्षा को अनिवार्य शिक्षा के रूप में पढ़ाया जाता है।

म. शिवाय

Topic________ Date 36

# प्रयोगशाला

विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए प्रयोगशाला का भी प्रबंध किया गया है। यहाँ विद्यार्थी क्रिया द्वारा अनुभव ग्रहण करते है। अर्थात् विद्यार्थी की खोज सम्बधी जिज्ञासा की पूर्ति होती है।

# शौचालय

* स्कूल में बच्चों के लिए शौचालय की सुविधाएँ भी है। यहाँ लड़के - लड़कियों तथा छोटे बच्चे के लिए अलग अलग सुविधाएँ है।

* यहाँ शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के लिए भी अलग अलग शौचालय है।

* इनकी साफ सफाई के लिए भी दो कर्मचारियों की नियुक्ति की गई है जो इनकी साफ सफाई पर विशेष ध्यान रखते है।

Topic Date 37

# * सामाजिक एवम् सांस्कृतिक कार्यक्रम

यहाँ विद्यालय में सामाजिक एव सांस्कृतिक कार्यक्रम भी करवाए जाते है। जिसका उद्देश्य बच्चों में समाज के प्रति जागरूकता तथा अपनी संस्कृति को अपनाना है।

# * श्रीमती इंदु बाला जी मैम द्वारा

एक सामाजिक कार्यकर्ता हेतू लड़कियों के लिए एक कार्यक्रम रखा जिसमें लड़कियों को किसी भी समस्या के समाधान हेतू भाषण या बातचीत द्वारा समझाया जाता है। लड़कियों को साफ - स्वच्छ रहने के तरीके समझाए जाते हैं। लड़कियों को अपनी सुरक्षा हेतु भी सुझाव दिए जाते है। बच्चों को समझाया जाता है कि आज के युग में लड़कियों को शिक्षा का अधिकार है तथा शिक्षा उनके लिए क्यों आवश्यक है। शिक्षा का उनके जीवन में क्या महत्त्व है। उन्हें समझाया गया कि स्त्री पुरूष के समान कंधे से कंधा मिलाकर अपनी जीवन सार्थक कर सकती है।

Topic _____ Date 38

तारों की टोली नाटक द्वारा यह सब समझाया गया। इसमें सभी बच्चों को बहुत आनन्द आया और बच्चों को उसमें भाग लेने का मौका भी मिला।

इसमें बच्चों को टी. वी पर एक कार्यक्रम दिखाया गया जिसमें लड़की के पैदा होने पर लड़के जितनी खुशी मनाई जाती है, जिसे देखकर सभी खुश हुए।

नम: शिवाय

Topic________________ Date 39

# मध्याह्न भोजन

मध्याह्न भोजन यानि Midday meal योजना विद्यालय में विद्यार्थियों को दोपहर के समय उपलब्ध थी ताकि विद्यार्थी तन्मयता से, विद्यालय में अध्ययन कर सके। अधिकतर बच्चे घर से भोजन नहीं लाते थे। मध्याह्न भोजन बच्चों के लिए पूरक पोषक के स्रोत और उसके स्वास्थ्य विकास के रूप में कार्य कर सकता है। यह समतावादी मूल्यों के प्रसार में भी सहायता करती है। क्योंकि कक्षा में विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थी एक साथ बैठते है तथा खाना खाते है। इसके अन्तर्गत दो - तीन महिलाएँ काम करती है। वह सबसे पहले खाने के चार्ट को देखती है और उसी के हिसाब से खाना बनाती है। सबसे पहले बर्तन और उस जगह को साफ करती है तत्पश्चात खाना बनाती है। विद्यालय में 6 से 8वीं तक के बच्चों को खाना मिलता है। सभी बच्चों को खाना देने से पहले ~~मुख्याध्या~~ मुख्याध्यापिका खाना चखती है उसके बाद छात्रों को ब्रेक में मध्याह्न भोजन दिया जाता है।